आर.एन.आई.नं.- UPHIN/2009/44666
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
सत्ता एक्सप्रेस
डी.ए.वी.पी. नई दिल्ली एवं राज्य सरकार द्वारा विज्ञापन मान्यता प्राप्त

गुणवत्ता परक बीज उत्पादन कर महिलाएं बने आत्मनिर्भर : डॉ सी पी सचान

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के साथ निदेशालय में पांच दिवसीय महिला सशक्तिकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम के तीसरे दिन डा.सी.पी.सचान , बीज उत्पादन अधिकारी ६ प्राध्यापक ,बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने बीज उत्पादन तकनीक पर पूर्ण विधा बतायी। उन्होंने बताया कि यदि गुणवत्ता परक बीज उत्पादन किया जाए तो महिलाएं उससे स्वावलंबी होगी। डा.मिथिलेश वर्मा , वैज्ञानिक

, गृह विज्ञान ने सरकार द्वारा संचालित महिलाओं के विकास हेतु विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया । डा.साधना बैस , वैज्ञानिक , गृह विज्ञान ने फल एवं सब्जी प्रसंस्करण की नवीनतम तकनीकियों पर विस्तृत चर्चा की । डा.अलका कटियार , वैज्ञानिक , गृह विज्ञान ने औषधीय वाटिका प्रबंधन एवं महत्व पर तथा डा. निमिषा अवस्थी , वैज्ञानिक , गृह विज्ञान ने महिलाओं के दैनिक जीवन में तनाव व थकान के कारणों एवं निवारण पर विस्तृत चर्चा की । डा. आशा यादव एवं डा.एस.बी.पाल ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल संचालन किया गया ।

वर्ष 15 अंक 295 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, गुरूवार 28 अक्टूबर 2021
कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित
RNI N.UPHIN/2007/27090
दैनिक नगर छाया
आप की आवाज़.....
www.nagarchhaya.com पेज-8

इंग्लैंड ने बांग्लादेश को 8 विकेट

गुणवत्ता परक बीज उत्पादन कर महिलाएं बने आत्मनिर्भर

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के साथ निदेशालय में पांच दिवसीय महिला सशक्तिकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम के तीसरे दिन डा.सी.पी.सचान , बीज उत्पादन अधिकारी / प्राध्यापक ,बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने बीज उत्पादन तकनीक पर पूर्ण विधा बतायी। उन्होंने बताया कि यदि गुणवत्ता परक बीज उत्पादन किया जाए तो महिलाएं उससे स्वावलंबी होगी। डा.मिथिलेश वर्मा , वैज्ञानिक , गृह विज्ञान ने सरकार द्वारा संचालित महिलाओं के विकास हेतु विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया । डा.साधना बैस , वैज्ञानिक , गृह विज्ञान ने फल एवं सब्जी प्रसंस्करण की नवीनतम तकनीकियों पर विस्तृत चर्चा की । डा.अलका कटियार , वैज्ञानिक , गृह विज्ञान ने औषधीय वाटिका प्रबंधन एवं महत्व पर तथा डा.निमिषा अवस्थी , वैज्ञानिक , गृह विज्ञान ने महिलाओं के दैनिक जीवन में तनाव व थकान के कारणों एवं निवारण पर विस्तृत चर्चा की । डा. आशा यादव एवं डा.एस.बी.पाल ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल संचालन किया गया।

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश
...रत ने रूस से हथियारों की खरीदी कम की... 12 | अखिलेश यादव ने कहा, मऊ का मैदान कुरुक्षेत्र... 03

जन एक्सप्रेस
लखनऊ
वर्ष: 13 | अंक: 18
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12
@janexpresslive janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper
लखनऊ | गुरुवार | 28 अक्टूबर, 2021

'मटर की वैज्ञानिक खेती कर अधिक लाभ कमाएं किसान'

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

मटर की खेती से जहां एक ओर कम समय में पैदावार ली जा सकती है तो वहीं यह भूमि की उर्वरा शक्ति भी बढ़ाने में सहायक है। फसल चक्र के अनुसार यदि इसकी खेती की जाए तो इससे भूमि उपजाऊ बनती है। मटर की जड़ों में मौजूद राइजोबियम जीवाणु भूमि को उपजाऊ बनाने में सहायक है। इस प्रकार मटर की वैज्ञानिक खेती कर किसान भाई अधिक लाभ कमा सकते हैं। यह बातें बुधवार को सीएसए के शोध छात्र प्रसून सचान ने कही।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के शस्य विज्ञान विभाग में शोधरत छात्र प्रसून सचान ने मटर की वैज्ञानिक खेती विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में 4.34 लाख लाख हेक्टेयर में मटर उगाई जाती है जो कुल राष्ट्रीय क्षेत्र का 53.7 प्रतिशत है। शोध छात्र ने बताया कि मटर बुवाई का उपयुक्त समय अक्टूबर के अंतिम पखवारा से नवम्बर मध्य तक उचित रहता है। मटर बुवाई के पूर्व राइजोबियम कल्चर से बीजों को उपचार करने के बाद ही बुआई करने से अधिक लाभ प्राप्त होता है।

उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि मटर के लिए 20 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस तथा 20 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने मटर की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि केपीएमआर 400, केपीएमआर 522, अपर्णा, रचना, पूसा प्रभात जैसी प्रजातियां उत्तम होती हैं। तथा बीज दर 75 से 85 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। रोग एवं कीटों की रोकथाम के लिए बीज एवं मृदा को शोधित अवश्य करें। सचान ने बताया कि किसान भाई अगर उत्तम कृषि कार्य प्रबंधन करते हैं तो 25 से 30 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है।

राष्ट्रीय सहारा
कानपुर • बृहस्पतिवार • 28 अक्टूबर • 2021

नैक के मानकों पर तैयार करें

कृषि विश्वविद्यालय की उपलब्धियां

सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के नैक के स्वमूल्यांकन की रिपोर्ट की जानकारी लेने के बाद कुलाधिपति राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने विश्वविद्यालय की समस्त उपलब्धियों को नैक के मानकों के अनुरूप तैयार करने के निर्देश दिये। उन्होंने विश्वविद्यालय में खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने को भी कहा।

राजभवन में राज्यपाल ने सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय का राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद के स्वमूल्यांकन की रिपोर्ट की जानकारी ली। इसके बाद उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डीआर सिंह को निर्देश दिये कि विश्वविद्यालय की उपलब्धियों की रिपोर्ट नैक के मानकों के आधार पर तैयार किया जाये। साथ ही उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय सांस्कृतिक गतिविधियों, सेमिनार, खेलकूद, रोजगार मेला व पूर्व छात्र सम्मेलन जैसे आयोजनों पर जोर दें। उन्होंने कहा कि नैक मूल्यांकन के समय गठित कमेटियां अपने अपने विषय पर उत्कृष्ट प्रस्तुतिकरण दें।

कुलाधिपति राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने दिये निर्देश

इसके लिये अभी से तैयारियां शुरू करने के निर्देश भी उन्होंने दिये। राज्यपाल ने कहा कि मूल्यांकन में इस बात का विशेष महत्व है कि विश्वविद्यालय द्वारा किये गये अनुसंधान और उसका ग्रामीण क्षेत्रों में किस सीमा तक किया गया। साथ ही उन्होंने लैब टू लैंड कार्यक्रमों को बढ़ावा देने को भी कहा। इस दौरान कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने राज्यपाल को गोद लिये गांव अनूपपुर में विश्वविद्यालय द्वारा किये जा रहे कामों की जानकारी दी।

राज्यपाल ने कहा कि वहां की बुकलेट व विकास कार्यों की रिपोर्ट तैयार करें। उन्होंने गेहूं, उड़द और मूंग के उत्पादन के लिये किये जा रहे न्यूक्लियर सीड प्रोडक्शन प्रोग्राम व ब्रीडर सीड प्रोडक्शन कार्यक्रमों को सराहा भी। इस दौरान राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव महेश कुमार गुप्ता, कुलसचिव डॉ. सर्वेन्द्र कुमार, डॉ. मिथलेश वर्मा, डॉ. पीके सिंह आदि थे।

आज | महानगर | कानपुर 28 अक्टूबर 2021 | 8

गुणवत्तापरक बीज उत्पादन कर महिलाएं बने आत्मनिर्भर

कानपुर, 27 अक्टूबर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के साथ निदेशालय में पांच दिवसीय महिला सशक्तिकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम के तीसरे दिन डा.सी.पी.सचान , बीज उत्पादन अधिकारी / प्राध्यापक ,बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने बीज उत्पादन तकनीक पर पूर्ण विधाओं के बारे मं जानकारियां दी। उन्होंने बताया कि यदि गुणवत्ता परक बीज उत्पादन किया जाए तो महिलाएं उससे स्वावलंबी होगी। वैज्ञानिक डा.मिथिलेश वर्मा ने सरकार द्वारा संचालित महिलाओं के विकास हेतु विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया। गृह विज्ञान विभाग की डा.साधना बैस ने फल एवं सब्जी प्रसंस्करण की नवीनतम तकनीकियों पर विस्तृत चर्चा की । डा.अलका कटियार ने औषधीय वाटिका प्रबंधन एवं महत्व पर तथा डा.निमिषा अवस्थी ने महिलाओं के दैनिक जीवन में तनाव व थकान के कारणों एवं निवारण पर विस्तृत चर्चा की । डा. आशा यादव एवं डा.एस.बी.पाल ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल संचालन किया गया ।

कार्यक्रम में शामिल महिलाएं।

DT दीनार टाइम्स | कानपुर न्यूज | www.dinartimes.in | कानपुर, बुधवार, 27 अक्टूबर 2021 | 13

मटर की जड़ों में मौजूद राइजोबियम जीवाणु भूमि को उपजाऊ बनाता

▶ मटर की वैज्ञानिक खेती कर लाभ कमाए किसान

डीटीएनएन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के शस्य विज्ञान विभाग में शोधरत छात्र प्रसून सचान ने मटर की वैज्ञानिक खेती विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि मटर की खेती से जहां एक और कम समय में पैदावार ली जा सकती है। वहीं यह भूमि की उर्वरा शक्ति भी बढ़ाने में सहायक है। फसल चक्र के अनुसार यदि किसकी खेती की जाए तो इससे भूमि उपजाऊ बनती है।

एक हेक्टेयर में 25 से 30 कुंतल मटर का उत्पादन

मटर की जड़ों में मौजूद राइजोबियम जीवाणु भूमि को उपजाऊ बनाने में सहायक है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में 4.34 लाख लाख हेक्टेयर में मटर उगाई जाती है जो कुल राष्ट्रीय क्षेत्र का 53.7% है। शोध छात्र प्रसून सचान ने बताया कि मटर बुवाई का उपयुक्त समय अक्टूबर के अंतिम पकवारा से नवंबर मध्य तक उचित रहता है मटर बुवाई के पूर्व राइजोबियम कल्चर से बीजों को उपचार करने के बाद ही बुआई करने से अधिक लाभ प्राप्त होता है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि मटर के लिए 20 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस तथा 20 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने मटर की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि के पी एम आर 400,केपीएमआर 522, अपर्णा, रचना, पूसा प्रभात जैसी प्रजातियां उत्तम होती हैं। तथा बीज दर 75 से 85 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। रोग एवं कीटों की रोकथाम के लिए बीज एवं मृदा को शोधित अवश्य करें। सचान ने बताया कि किसान भाई अगर उत्तम कृषि कार्य प्रबंधन करते हैं तो 25 से 30 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है।

बीज उत्पादन कर महिलाएं होंगी स्वावलम्बी : डॉ. सीपी

कानपुर। सीएसए के साथ निदेशालय में पांच दिवसीय महिला सशक्तिकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम के तीसरे दिन डा .सी. पी .सचान , बीज उत्पादन अधिकारी / प्राध्यापक , बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने बीज उत्पादन तकनीक पर पूर्ण विधा बतायी। उन्होंने बताया कि यदि गुणवत्ता परक बीज उत्पादन किया जाए तो महिलाएं उससे स्वावलंबी होगी।